International Journal of Zoology Studies
ISSN: 2455-7269; Impact Factor: RJIF 5.14
Received: 20-01-2019; Accepted: 23-02-2019
www.zoologyjournals.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 69-71

छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

कमलेश कुमार जड़िया[1], डॉ0 जय सिंह[2]

[1] वरि. व्याख्याता (शिक्षा), शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक (शिक्षा), शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

इस शोध पत्र के द्वारा छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 69.75 है तथा मानक विचलन 12.94 है। ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.75 है तथा मानक विचलन 13.13 है। 158 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.40 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थक अन्तर है।

शोध क्षेत्र में 90.42 प्रतिशत अभिमतदाताओं के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 7.08 प्रतिशत मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 2.50 प्रतिशत शिक्षकों को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

मूल शब्द : छतरपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, समग्र मूल्यांकन, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना

मूल्यांकन दो शब्दों से मिलकर बना है ''मूल्य'' और ''अंकन''। इसका अर्थ है मूल्य का अंकन करना। मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होता है। शिक्षा क्षेत्र में मूल्यांकन विद्यार्थियों के सभी क्रियाकलापों का विश्लेषण करता है। प्रत्येक क्रिया–कलाप के पीछे कोई न कोई उद्देश्य निहित होता है। विद्यार्थी इन उद्देश्यों की पूर्ति अथवा प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। प्रयत्नों के परिणाम क्या रहे हैं इसका अंत में पता भी लगाते हैं प्रयत्नों की सफलता, असफलता के कारणों का भी पता लगाया जाता है वही मूल्यांकन है। ''समग्र मूल्यांकन'' एक औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है। शिक्षण का प्रमुख कार्य छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है, जिसके लिए समुचित सीखने के अनुभव छात्रों को प्रदान करने की व्यवस्था की जाती है और मूल्यांकन द्वारा इन व्यवहार परिवर्तन का मापन किया जाता है।

प्रारंभिक शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु तथा उसकी गुणवत्ता में सुधार हेतु समय समय पर विभिन्न सरकारों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण योजनाऐं व कार्यक्रम लागू किये जाते रहें है। इसी तारतम्य में केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2000 में सर्व शिक्षा अभियान का प्रवर्तन किया गया जिसमें वर्ष 2010 तक 6–14 वर्ष तक के सभी बच्चों को अनिवार्य व गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रारंभिक शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि करने के प्रयास के अन्तर्गत ही मध्यप्रदेश में जन शिक्षा अधिनियम 2002 निर्मित किया गया है। भारत सरकार ने शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 में यह प्रावधानित कर दिया है कि 6–14 वर्ष तक के सभी विद्यार्थियों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करना है। अतः शिक्षकों का अब यह उत्तरदायित्व है कि वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षण व्यवस्था से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ साथ उनमें चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों का विकास करें एवं समग्र मूल्यांकन की गुणवत्तापूर्ण प्रकिया लागू करें। विद्यार्थी विषय सामग्री को कितना आत्मसात कर रहे हैं? उनमें कितनी समझ एवं अनुभव विकसित हो रहा है? विद्यार्थियों के व्यवहार में कितना किस सीमा तक व्यवहारिक परिवर्तन हो रहें है? इसे जांचने के लिए जो विभिन्न प्रकार के परीक्षण या गतिविधियाँ की जाती हैं वे प्रक्रियाएं समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत ही आती है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं व्यवहारगत परिर्वतनों का परीक्षण समग्र मूल्यांकन के द्वारा ही हो पाता है। इन मूल्यों को प्राप्त करने में जिला स्तर पर विभिन्न परेशानियां आती है। जैसे विद्यार्थियों का अभिभावकों के साथ पलायन, विद्यार्थियों द्वारा नियमित गृहकार्य एवं अभ्यास–कार्य की जांच न करना। शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया में पारदर्शिता न रखना इत्यादि। समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया में संस्था प्रमुख की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वह अपनी भूमिका को कितना निभाते हैं यह व्यक्तिगत कार्य कुशलता पर निर्भर होता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल छतरपुर जिले वरन् सम्पूर्ण म.प्र. के छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव व शासकीय प्रयासों व प्रभावों को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. शोध की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है :

1. "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"
2. "प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।"

4. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

- विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन के विषय में शिक्षको की समझ का अध्ययन करना।
- प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शैक्षणिक गतिविधियों की वस्तु स्थिति का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला छतरपुर है। अतः जिला अन्तर्गत विकासखण्ड – ईशानगर, विजावर, बड़ामलहरा, बकस्वाहा, नौगांव, लवकुशनगर, बारीगढ़, राजनगर के प्रारंभिक स्तर के विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन को इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया ळें

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करने के लिये क्षेत्र में संलग्न शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तु स्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

चूंकि छतरपुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए प्रत्येक विकासखण्ड से 10 विद्यालय कुल 80 विद्यालयों (40 प्राथमिक एवं 40 माध्यमिक) का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। न्यादर्श के रुप में चयनित विद्यालयों से प्रति विद्यालय 2–2 शिक्षक कुल 160 शिक्षक, विद्यालय के प्रधानाध्यापक का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007)[1], पाठक, पी.डी. (2007)[2], सिंह, ममता (2007)[3], श्रीवास्तव, डी.एस. (2006)[4], त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007)[5], श्रीवास्तव, मयंक (2007)[6], सिद्दीकी, एस.ए. (2004)[7] एवं सिंह, इन्द्रजीत (2006)[8]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

सागर संभाग अन्तर्गत छतरपुर जिला एक विशिष्ट राजस्व क्षेत्र जो कि 24°25'' से 80°15'' पूर्वी अक्षांश के मध्य 8 विकासखण्डों में विस्तारित है। छतरपुर जिला भारत के मध्यप्रदेश राज्य के 51 जिलो में से एक है। जिला प्रशासन का मुख्यालय छतरपुर शहर में स्थित है। यह जिला मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से पश्चिम की ओर 336 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस जिले में 6 अनुभाग (सब डिवीजन), 11 तहसील, 8 जनपद पंचायत, 3 नगरपालिका तथा 12 नगर परिषद् है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक – 01: "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी 1: "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी	ग्रामीण
समूह की संख्या (N)		80	80
मध्यमान (M)		69.75	62.75
मानक विचलन (SD)		12.94	13.13
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.40	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

df = (80-1) + (80-1) =79+79 =158

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित

प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 69.75 है तथा मानक विचलन 12.94 है। ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.75 है तथा मानक विचलन 13.13 है।

158 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.40 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 निरसित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 "प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।"

सारणी 2: प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

क्र.	न्यायदर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव					
			पड़ रहा है		नही पड़ रहा है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	80	70	87.50	10	12.50	-	-
2.	शिक्षक	160	147	91.88	7	4.38	6	3.74
योग		240	217	90.42	17	7.08	6	2.50

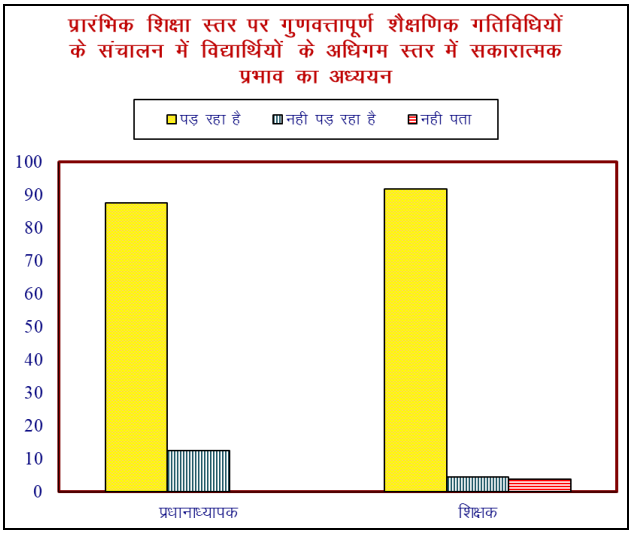

सारणी क्र. 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के 87.50 प्रतिशत प्रधानाध्यापक व 91.88 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 12.50 प्रतिशत प्रधानाध्यापक व 4.38 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 3.74 प्रतिशत शिक्षकों को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

शोध क्षेत्र में 90.42 प्रतिशत अभिमतदाताओं के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 7. 08 प्रतिशत मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 2.50 प्रतिशत शिक्षकों को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैः

- शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 69.75 है तथा मानक विचलन 12.94 है। ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.75 है तथा मानक विचलन 13.13 है। 158 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0. 01 विश्वास स्तर पर 2.60 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.40 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की विद्यार्थियों के समग्र मूल्यांकन करने की समझ में सार्थक अन्तर है।
- शोध क्षेत्र में 90.42 प्रतिशत अभिमतदाताओं के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 7.08 प्रतिशत मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 2.50 प्रतिशत शिक्षकों को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

12. संदर्भ

1. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2007), सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
2. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
3. सिंह, ममता (2007), प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन, Researches and Studies, Vol. 58 PP. 85.
4. श्रीवास्तव, डी.एस. (2006), भारत में शिक्षा का विकास, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाशन, आगरा.
5. त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007), भारत में प्राथमिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
6. श्रीवास्तव, मयंक (2007), प्राथमिक शिक्षा बढ़ता प्रयास घटता स्तर, 'कुरूक्षेत्र' मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष– 53, अंक–11, पृ.22–25.
7. सिद्दीकी, एस.ए. (2004), मध्यप्रदेश संपूर्ण अध्ययन, उपकार प्रकाशन, आगरा।
8. सिंह, इन्द्रजीत (2006), वास्तविक शिक्षा क्या है? प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, आगरा, पृ0 375–376।